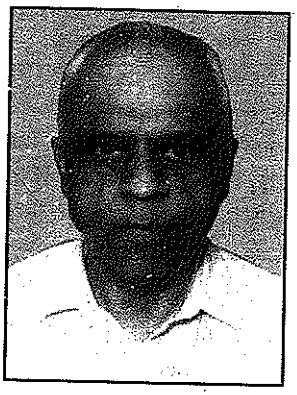

दो शब्द

प्रिय पाठको,

इस शोध-पुस्तक की अनेक विशेषताएं हैं, उनमें से कुछ मुख्य-मुख्य नीचे दी जा रही हैं:-

1. पुस्तक के भाग-2 की रचना हमारी संस्था के निदेशक (Director) महोदय द्वारा नौ विभिन्न तिथियों पर सभा के सदस्यों के समक्ष प्रस्तुत की गयी चर्चा पर आधारित है तथा इस में प्रकृति के सिद्धान्तों पर आधारित ***'मानव-धर्म'*** की व्याख्या आधुनिक विज्ञान के शब्दों में की गयी है।

गीता के अध्याय ग्यारह की भाँति ही विराट दर्शन की वैज्ञानिक समझ इस पुस्तक का विशेष आकर्षण है और दूसरी सबसे बड़ी शोध की बात है ***'प्रतीक-विज्ञान'*** का अद्‌भुत वैज्ञानिक विश्लेषण, जो ***'वैदिक-धर्म'*** का ***'हृदय'*** है तथा तीसरी महत्त्वपूर्ण बात है ***'निराकार और साकार'*** उपासना की तकनीक के सम्बन्ध में। इस प्रकार यह रचना विश्व प्रसिद्ध पुस्तक Tao of Physics (By Dr. Fritjof Capra, Phd.) के स्तर की है।

2. इस पुस्तक में लेखक महोदय ने विशाल वैदिक धर्म के अनेक मत-मतान्तरों का समन्वय एवम् एकत्व स्थापित करने का सुन्दर प्रयास किया है। पुस्तक के तीसरे खण्ड में ***मानव-धर्म का आधार - "गायत्री मंत्र", की वैज्ञानिक व्याख्या*** दी गयी है, जिससे पूर्वकाल में भारतीय चिन्तकों द्वारा की गयी उच्च कोटि के शोध कार्य की जानकारी मिलती है। इसके अतिरिक्त वैदिक-धर्म के शोध सम्बन्धी अनेक लेख तीसरे खण्ड में जोड़े गये हैं।

3. धर्म का स्वरूप बतलाते हुए लेखक महोदय ने प्रकृति के शाश्वत सिद्धान्तों, की बहुत सुन्दर विज्ञान-सम्मत व्याख्या की है। यह अपने आप में एक अद्‌भुत प्रयास है। इसी प्रकार संस्कृति का स्वरूप प्रकृति का व्यवहार बतलाया गया है तथा सम्पूर्ण रूप से ***'प्राकृतिक-धर्म'*** ही ***'मानव-धर्म'*** है अथवा ***'वैदिक-सनातन-धर्म'*** है, ये तीनों ही समानार्थक हैं, ऐसा सिद्ध किया गया है।

4. क्योंकि यह पुस्तक वैज्ञानिक दृष्टिकोण से लिखी गयी है, अतएव पुस्तक के भाग-2 की शोध सामग्री अपने आप में ***'गागर में सागर'*** समेटे हुए है तथा ***सम्पूर्णता की विशाल सोच से परिपूर्ण*** है।

5. आज पश्चिमी जगत से प्रवाहित हो रही भौतिकवादी विचारधारा से पूरे विश्व में बदलाव आ रहा है। भारत एवम् विश्व की युवा पीढ़ी धर्म से सम्बन्धित अनेक मान्यताओं को नकार रही है। परन्तु ऐसा विश्वास है कि ***'सनातन-वैदिक-धर्म'*** की तर्क-सम्मत व्याख्या से उनके मनों में उठने वाली बहुत सी शंकाओं का समाधान होगा।

6. विश्व में एक लम्बे समय से धर्म के सम्बन्ध में भ्रम फैला हुआ है, जिससे सैंकड़ों वर्षों से अनावश्यक रूप से हिंसा का प्रसार हो रहा है, फलस्वरूप मानवता ***त्राहि-त्राहि*** कर उठी है। ***अतएव लेखक महोदय ने पूरे वैज्ञानिक जगत का आवाहन किया है, कि वह गैलेलियो की भाँति निडर होकर धर्म पर खुले मस्तिष्क से मन्थन करें, जिससे पूरे विश्व में विज्ञान पर आधारित विश्व धर्म की स्थापना हो सके। हमारी संस्था द्वारा इस पुस्तक के लेखन का मुख्य उद्देश्य भी यही है।*** पुस्तक के अन्त में लेखक महोदय के सम्बन्ध में देश-विदेश के बड़े-बड़े विद्वानों की सम्मति का सारांश दिया गया है, आशा करता हूँ, कि माननीय विद्वान पाठकों को ***'मानव-धर्म'*** की वैज्ञानिक व्याख्या प्रिय लगेगी।

यद्यपि इस संकलन को तैयार करते समय किसी व्यक्ति, संस्था अथवा सम्प्रदाय की अवमानना करने का कोई उद्देश्य नहीं रहा है, तथापि अनजाने में यदि ऐसा हो गया हो, तो संस्था की ओर से मैं क्षमा याचना करता हूँ।

अन्त में आदरणीय पाठकों से निवेदन है, कि पुस्तक के सम्बन्ध में वे अपने सुझाव, टिप्पणियाँ एवम् त्रुटियाँ संस्थान को पत्र लिखकर यथाशीघ्र भेजने की कृपा करें।

धन्यवाद।

Prof. B.R. Chawla

प्रो. बी. आर. चावला

MSc., L.L.B, F.I.E, F.I.E.T.E, F.I.Mech, E.Dip T.D., FIEEE,
PGDBM, CEng, Wing Commander (I.A.F. Retd.)